संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : छठा | अक्टूबर–2015

भरोसा (सतसंग)	5
गुरु का स्वपन (सवाल–जवाब)	13
अनमोल संदेश	19
दिल की तड़प (सतसंग)	25

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा,
नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039
जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन: 096 67 23 33 04

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अक्टूबर 2015 –163– मूल्य – पाँच रुपये

बंदा बण के आया रब बंदा बण के आया

बंदा बण के आया, रब बंदा बण के आया, (2)
आ के जग जगाया, रब बंदा बण के आया, (1)

1. जन्म–जन्म दी रूहां सी अटकी,
लख–लख कोहां रही सी भटकी, (2)
आपे मेल कराया, रब बंदा बण के .....

2. लख–लख पापी आऐ दवारे,
एक नज़र से ओहने तारे, (2)
बेड़ा पार लगाया, रब बंदा बण के .....

3. दया मेहर जिन्हां ने पाई,
आण मिले ना देर लगाई, (2)
भेद ओन्हां ने पाया, रब बंदा बण के .....

4. सतसंग में ऐह होका लाया,
बंदे तूं क्यों जग में आया, (2)
प्रेम दा राह बताया, रब बंदा बण के .....

5. सिमरन भजन दी राह बताई,
कर्म दिए सारे छुड़वाई, (2)
नाम दा जाप कराया, रब बंदा बण के .....

6. 'अजायब' कहे करो नाम कमाई,
कृपाल होऐ आपे प्रभु आई, (2)
सच्चा सुख वरताया, रब बंदा बण के .....

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भरोसा

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

मुम्बई

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया अपना यश करने का मौका दिया। हम इस नाशवान दुनिया का मोह छोड़ दें इसमें से ख्याल निकाल लें और उस परमात्मा के साथ प्यार करें जो अमर है, सच है और आदि-जुगादि से चला आ रहा है। लेकिन जीव के लिए मुश्किल यह आती है कि वह परमात्मा गुप्त है हमने उसे देखा नहीं तो हम उसके साथ किस तरह प्यार करें?

वह दयालु परमात्मा हम सबके अंदर बैठा है, वह हमारी इस मुश्किल को अच्छी तरह जानता है कि इन्होंने मुझे देखा नहीं तो ये मेरे साथ किस तरह प्यार कर सकते हैं? वह रहम का समुद्र है, दया का सागर है। परमात्मा जब रहम करता है तो खुद इंसान का रूप धारण करके इस संसार में आता है।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त हमें लंबी-चौड़ी कहानियां सुनाने के लिए नहीं आते। उनका मकसद इतना ही होता है कि ये सच्चाई को खुद देखें। हम भूले जीव बहन-भाई, बेटे-बेटी, समाज और दुनिया के मोह में इतने फँस चुके हैं कि हमें रात को भी इन्हीं के स्वपन आते हैं। सन्त हमें संसारी कहानियां सुनाकर उतार-चढ़ाव की बातें बताते हैं और अंदर जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

सतगुरु शिष्य के अंदर इस तरह प्यार का बीज बीजता है जिस तरह माता अपना प्यार बच्चे के अंदर पैदा करती है। बच्चे को पता लगता है कि यह मेरी माता है अगर माता बच्चे से थोड़ी सी दूर हो जाए तो वह चीखें मारने लग जाता है। बच्चा बोलना नहीं

जानता अगर उस बच्चे से पूछें कि तेरी मम्मी कौन सी है? तो वह फौरन अपनी माता की तरफ अंगुली कर देगा।

यह इस तरह है जैसे कोई पहाड़ की चोटी पर खड़ा है वह ऊपर से नीचे आकर, नीचे वाले को पहाड़ की जानकारी देता है कि पहाड़ पर बहुत ठंड है, वहाँ बहुत जड़ी-बूटियां है। वह मीठी और प्यारी बातें करता है, पहाड़ की अच्छाई बताता है और अपने प्यार में नीचे वाले को भी पहाड़ पर ले जाता है।

मेरे ख्याल में यह इस तरह है जैसे शुरु-शुरू में रसल प्रकिन्स, डेविस और ग्रेक मुझे बाहर के मुल्कों की तस्वीरें और नक्शे दिखाते कि वहाँ के मुल्क इतने सुंदर हैं। वे मुझसे पूछते क्या आपने ऐसे सुंदर मुल्क पहले कभी देखे हैं? मैं यह सुनकर बहुत हँसता था आखिर एक दिन मैंने कहा, ''शायद! मैंने देखे हैं।''

मैं जब फ्लोरिडा गया मुझे वहाँ जोन्स मिला। उसने मुझसे कहा, ''सन्तजी! क्या आपने पहले भी इस तरह के एयरपोर्ट देखे हैं?'' मैंने हँसकर कहा, ''हो सकता है परमात्मा कृपाल की दया से इससे भी अच्छे देखे हैं, ये उसके मुकाबले में तुच्छ हैं।''

प्यारेयो! उस समय मेरी हालत यह थी कि मैंने बाहर से ताला लगवाया हुआ था, मैं किसी से मिलता भी नहीं था। शाम को एक घंटे के लिए बाहर आता था। जब ये प्रेमी मुझे हिन्दुस्तान में आकर मिले तो इन्होंने मुझे वहाँ ले जाने की बहुत कोशिश की। इन सबमें डेविड बेकिंस भी शामिल था जिसने बहुत ही मीठी-मीठी बातें की। मैं इनके प्यार की कद्र करता हुआ इनके मुल्क में चला गया।

मैं आपको यह वाक्या इसलिए सुना रहा हूँ ताकि आपको समझाना आसान हो जाए। इसी तरह कोई विदेश का प्रेमी आपके

देश में आकर अपने देश की अच्छी मीठी बातें करता है तो आप उसकी सोहबत करके उसके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इसी तरह परमात्मा भी हमारी इसी लाचारी को समझता हुआ खुद ही रहम का समुद्र उछलता है इंसानों में इंसान बनकर कभी किसी सन्त तो कभी किसी सन्त के रूप में आ जाता है। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं वे उसके पास पहुँच जाते हैं। वह जिस वतन से आता है हमें वहाँ की मीठी प्यारी बातें सुनाता है जो उसकी बातों पर ऐतबार कर लेते हैं वे उसके साथ चले जाते हैं क्योंकि आत्मा को पता है कि मेरा घर कौन सा है? लेकिन यह मन का साथ लेकर इस इंसानी जामें में आकर अपने घर को भूल चुकी है। जब वे आत्मा को संदेश देते हैं तब आत्मा उस संदेश को समझकर चल पड़ती है और अपने घर पहुँच जाती है।

सन्त न कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं न पहले बनी तोड़ने के लिए आते हैं न वे इस दुनिया में बड़े-बड़े आश्रम बनाने के लिए आते हैं। वे तो सिर्फ भूली हुई आत्माओं को उनके घर की याद दिलाने के लिए आते हैं। जिनका वक्त आ चुका होता है, जिन आत्माओं के लिए परमात्मा ने सच्चखंड में फैसला कर लिया होता है कि इन आत्माओं को अपने पास बुलाना है।

महात्मा को पता होता है कि मैंने किन आत्माओं को नाम देना है। इन्हें किसके जरिए बुलाना है या वहाँ खुद जाना है। यह पहले से ही उनकी प्लेनिंग में होता है। महात्मा को किसी प्रचार-टेलिविजन या ईश्तहारों की जरूरत नहीं पड़ती।

आज पब्लिसिटी का युग है। शुरू में जब मैं 16 पी.एस. आश्रम से चलता था तब रास्ते में जगह-जगह सिनेमा वालों के बोर्ड होते

थे लेकिन आजकल जगह-जगह महात्माओं के बोर्ड लगे हुए हैं। मैं पप्पू को बताया करता हूँ कि आजकल महात्मा का बोलबाला है कोई ऐसा चौंक नहीं जहाँ महात्मा के बोर्ड न लगे हों।

आज कितनी आत्माएं परमात्मा कृपाल के नाम में जाग चुकी हैं। मैंने अभी अमेरिका के सन्तबानी आश्रम में सतसंग दिया ही था कि शम्स आश्रम वाले प्रेमियों ने कहा कि हम ज्यादा प्रेमियों का इंतजाम नहीं कर सकेंगे। कितने प्रेमी आएंगे हम उनका इंतजाम कैसे करेंगे? सोचकर देखें! मैंने तो बाहर कभी प्रचार ही नहीं किया। जिन्हें अपने साथ जोड़ना है परमात्मा कृपाल अंदर ही उन आत्माओं को जानकारी देते हैं। जब रहम का समुंद्र परमात्मा उछलता है तो किसी महात्मा के रूप में आकर खुद ही अपने प्यार का बीज बीजता है; सतसंग का पानी देकर हरा-भरा करता है।

जिस तरह हमारा कोई खास प्यारा बिछड़ा हुआ अचानक हमें मिल जाए तो दिल को कितनी खुशी होती है। आत्मा को पता है कि मेरा प्यारा कौन है, मेरा घर कौन सा है और मैं कहाँ से आई हूँ? जब उसके साथ मिलाप होता है तो वह भूली हुई आत्मा को याद दिला देता है कि बेटी! तू तो भूली हुई है तू मेरी बच्ची है। आत्मा सतनाम परमात्मा की बच्ची है। सन्त उस परमात्मा के भेजे हुए संसार में आते हैं वह समुद्र में से लहर बनकर आते हैं। आत्मा बूंद है। बूंद भी पानी है, लहर भी पानी है; समुद्र भी पानी है। फर्क तो सिर्फ बिछोड़े का है।

मुझे बचपन से ही **भरोसा** था, मैं जिंदगी में **भरोसा** लेकर ही चला हूँ। **भरोसे** की वजह से ही परमात्मा रूप कृपाल मेरे घर आए। परमात्मा कृपाल का वाक ही मेरी पब्लिसिटी है। आपने कहा था, ''इसमें से महक आएगी और वह महक समुद्र पार कर

जाएगी।'' परमात्मा कृपाल का वाक ही सब प्रेमियों को अंदर जानकारी देता है। आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनने वाला हैः

कवन गुन प्रान पति मिलउ मेरी माई।।

जब प्रेमी आत्मा में तड़प उठती है तो वह पहुँचे हुए साधु-सन्त की खोज में लग जाती है। जब उसका प्यारा मिल जाता है तो वह दूसरी आत्मा से पूछ लेती है, ''बहन! मुझे क्या गुण धारण करना चाहिए वह क्या चढ़ावा लेता है उसकी क्या भेंट-पूजा है, जिससे वह मुझे मिल जाए?'' दूसरी आत्मा उसे जवाब देती हैः

रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई।।

वह आत्मा कहती है कि मेरा अच्छा रूप नहीं। मुझसे आगे एक से एक सुंदर हैं, मेरी अच्छी बुद्धि भी नहीं। मुझे यह भी पता नहीं कि मैंने उसके साथ किस तरह बात करनी है? पता नहीं वह मुझे पसंद करे या न करे !

जब मुझे परमात्मा कृपाल मिले तो मैंने अपने प्यारे गुरु से यही कहा, ''मुझे नहीं पता कि मैंने आपको क्या कहना है, कैसे बुलाना है? मेरा दिल-दिमाग खाली है।''

नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई।।

मुझे न भजन-सिमरन का गर्व है न यौवन का गर्व है। मेरी वहाँ जाकर किस तरह सुनवाई होगी? आपको पता है कि जो प्रेमी भजन-सिमरन करके नहीं आते वे मेरे पास आकर यही कहते हैं, ''हमें आपके पास आते हुए बहुत शर्म आती है।'' जो प्रेमी भजन करके आते हैं वे मुझे अच्छे तजुर्बे बताते हैं। मुझे भी खुशी होती है और उन्हें भी मेरा जवाब सुनकर खुशी होती है।

अगर हम यह सोचें कि वह मालिक का प्यारा अंदर हमारी इंतजार में बैठा है तो हम उसे क्या भेंट चढ़ाएंगे?

अज की ले जाऊंगा मैं भेंटा यार दी, ते खाली हाथ जांदे नूं शर्म मार दी।
अज न जे गया ते बात है गजब दी, एक दिन मंगदा मगोंदा गया घरे यार दे।
अलख जगाई जिवें हौका मार दे, खैर आके पाओ पाओ वे मरादियां।
ठीकरे च खैर कृपाल आण पाया है, हो गया बेहोश ते नैन भर आया है।
अजायब जाण लीता मेरा यारां दीआ।।

नौं द्वारे खाली करके अंदर जाकर अगर मिलाप नहीं किया तो गजब है। जिस तरह मैंने बहुत सारे दरवाजे खटखटाए लेकिन अपनी कोशिश नहीं छोड़ी। तेरी मुराद पूरी होगी तू जैसा शिष्य चाहता है तुझे वैसा ही शिष्य मिल जाएगा। आदि-जुगादि से बिछुड़ा हुआ यार मेरे पास आ गया है।

ऐसा नहीं कि हमने बेटे-बेटियां, समाज या कोठियां छोड़ देनी हैं। प्यारेयो! हमने इनमें से अपने दिल को निकालना है। जब सेवक अपने आपको अनाथ समझता है तो गुरु रखवाला होता है। गुरु गरीब नवाज होता है उसे हमारे ऊपर तरस आता है वह जरूर हमारी सहायता करता है।

खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई।।

उस परमात्मा को मठों में खोजा, जप-तप किए, जलधारे किए, धुणे तपाए और कई कर्मकांड किए लेकिन इनके करने से तृप्ति तो क्या आनी थी बल्कि तड़प और बढ़ गई।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब हमने खोज की सन्त-महात्माओं के चरणों में गए तो दिल में और तड़प पैदा हुई कि ये जिस परमात्मा की इतनी मीठी बातें करते हैं उससे मिलकर ही हम शान्ति प्राप्त कर सकते हैं, क्यों न उससे मिला जाए।''

दीन दइआल कृपाल प्रभ नानक साध संगि मेरी जलनि बुझाई ।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जहाँ चाह वहाँ राह, जिसे पुकारते हैं वह मिलता है।'' अब आप कहते हैं कि कृपा करने वाला साधु मिला दिया, मैं उस साधु की संगत में बैठा तो मेरी तृष्णा बुझ गई। मेरे अंदर परमात्मा की तड़प थी मुझे परमात्मा मिल गया है।

प्रभ मिलबे कउ प्रीति मन लागी।।
पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बड़भागी।।

मैं पैरों पर भी गिरता हूँ कि मुझे भाग्य वाला सन्त मिला उसने मुझे मेरे घर पहुँचा दिया। उसने न मेरा घर-बार छुड़वाया, न मुझ पर कोई अहसान किया न मुझसे कोई मुआवजा ही मांगा।

जब आत्मा की प्यास बुझ जाती है अंदर 'शब्द-रूप' गुरु प्रकट हो जाता है फिर आत्मा उसका शुक्राना करती है। मैं रोज ही आपसे कहता हूँ अगर गुरु से आपका कोई फायदा हुआ है तो आपका हृदय प्यार से भर जाना चाहिए। साँस-साँस के साथ मुँह से उसका शुक्राना निकलना चाहिए।

मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी।।

गुरु अर्जुनदेव जी ने जगह-जगह सन्तों की महिमा लिखी हैः

हम सन्तन की रैण प्यारे हम सन्तन की शरणा।
सन्त हमारी ओट सताणी सन्त हमारा गहना।
सन्तन स्यों मेरी लेवा देवी सन्तन स्यों व्यवहारा।
सन्तन मोको पूंजी सौंपी ते उतरया मन का धोखा।
धर्मराय अब कहाँ करेगो जो फाटयो सगलो लेखा।
महा आनन्द पया सुख पाया सन्तन के प्रसादे।
कहो नानक हर स्यों मन मान्या रंग रते बिसमाधे।।

जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी।।

सतसंग की कद्र उन्हें है जो सतसंग की महिमा जानते हैं। गुरु की कद्र उन्हें है जो गुरु की महिमा जानते हैं। मैं गुरु के पीछे वैरागी हूँ जो अपने देश से आकर मुझे प्रभु की मीठी प्यारी बातें सुनाता है। कबीर साहब भी कहते हैं:

सन्त की गैल न छोड़िए, मार्ग लगया जाए।
पेखत ही पुनित होय, भेटत जपिए नाओ।।

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी।।

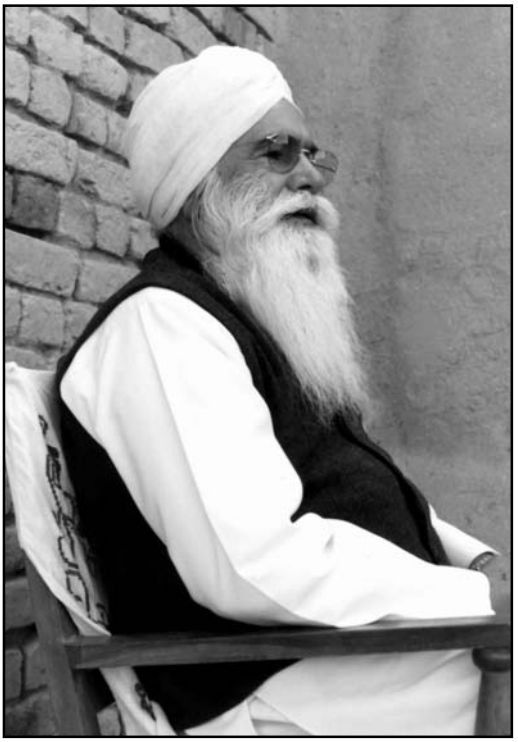

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज सवाल करते हैं क्या हम अपने आप ऐसे महात्मा की कथा सुन लेंगे या उसकी संगत में बैठ जाएंगे? आप फिर कहते हैं, ''जब पहले के बहुत सारे अच्छे कर्म इकट्ठे हो जाते हैं तो परमात्मा उसका ईनाम देना चाहता है तभी हम ऐसे महात्मा का सतसंग सुन सकते हैं; दो घड़ी बैठ सकते हैंभूले हुए मन को समझा सकते हैं।''

मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी।।

6 जनवरी1997

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु का स्वपन

डी.वी.डी. - 612

जयपुर

एक प्रेमी:- *आप हमें समझाएं कि हम जिन चीजों के बारे में बात करते हैं कि आप हमें स्वपन द्वारा या अभ्यास में जो कुछ देते हैं अगर हम उस बारे में लोगों से बातचीत करते हैं तो क्या हम वह सब कुछ खो बैठते हैं या थोड़ा बहुत खोया जाता है? अगर हम तजुर्बों के बारे में बात करें तो क्या हमें वैसा तजुर्बा दोबारा हो सकता है या किसी से बातचीत करने से वह तजुर्बा हमेशा के लिए खो जाता है और इसका हमारे अभ्यास पर क्या असर पड़ता है?*

बाबा जी:- हाँ भाई! बड़ा अच्छा सवाल है। इस किस्म के कई सवालों के जवाब सन्तबानी मैगज़ीन में छप चुके हैं जिसमें बताया गया हैं कि हमें मन किस तरह परेशान करता है अगर आप लोग मैगज़ीन पढ़ने की आदत डालें तो आपको ऐसे सवालों के जवाब एक नहीं तो दूसरी मैगज़ीन में बड़ी आसानी से मिल सकते हैं।

आमतौर पर हम दिन में जो कारोबार करते हैं स्वपन उसी सोचनी से जन्म लेते हैं। जागृत अवस्था में हमारी आत्मा तीसरे तिल पर होती है हमें पूरी होश होती है। जब हम सोते हैं तो यह कंठ में आ जाती है कुछ बातें याद रहती हैं कुछ याद नहीं रहती। जब आत्मा इससे नीचे नाभि में उतर जाती है तो हम गहरी नींद में चले जाते हैं फिर हमारी चेतन शक्ति पूरी जागृत अवस्था में नहीं होती उस समय हम जो सोच रहे होते हैं वह अधूरा होता है।

कई बार हम स्वपन में दौड़ते हैं, दौड़ा नहीं जाता। कई बार स्वपन में डर भी लगता है। सतसंग में बताया जाता है कि नाम से बिछुड़कर हमें न जागते हुए शान्ति है न सोते हुए शान्ति है। सोते

हुए भी हम मारो-मारो! पकड़ो-पकड़ो! करते हैं, हमें चैन नहीं होता। आमतौर पर ऐसे स्वपन भयानक होते हैं कई बार डरावने स्वपन भी आ जाते हैं।

मैं आपको इस सवाल का जवाब दो हिस्सों में समझा रहा हूँ। पहला हिस्सा आपको दुनियावी स्वपनों के बारे में बताया है। दूसरा सवाल आपने **गुरु के स्वपन** के बारे में पूछा है अगर आपको स्वपन में गुरु नज़र आता है अच्छा तजुर्बा होता है तो क्या हमें इन तजुर्बों के बारे में लोगों को बताना चाहिए?

सदा बताया जाता है कि सतगुरु नामरूप पवित्र बर्तन होता है। आँखों से नीचे इन्द्रियों के भोग और विषय-विकार हैं। गुरु पवित्र हस्ती है। गुरु कभी भी हमें आँखों से नीचे आकर दर्शन नहीं देगा और न मिलेगा लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि हम सतसंगी इतना अभ्यास नहीं करते। जो लोग अभ्यास करते हैं वे इस चीज़ को अच्छी तरह समझ जाते हैं। जब कभी हम अभ्यास करके सोए होते हैं हमारी आत्मा शान्त होती है ऐसे वक्त में गुरु अपनी प्यार भरी नज़र के साथ प्यार की कुंडी से आत्मा को इन नौं द्वारों में से ऊपर निकालकर ऊपर के मंडलों में ले जाता है। गुरु का जब भी दर्शन होता है ऊपर के मंडलों में होता है। कई बार तो जिन अभ्यासियों का पर्दा सिमरन-अभ्यास के वक्त न खुले ऐसे वक्त में पर्दा खुल जाता है।

मन हमारा जानी दुश्मन है यह काल का एजेन्ट है। इसकी यही ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा सतगुरु से नाम प्राप्त न कर सके अगर आत्मा नाम प्राप्त कर भी ले तो अभ्यास न कर सके अगर यह अभ्यास करे भी तो मन इसे भ्रम में डाल देता है; मन कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता।

मैं जब पहले टूर पर निनेमो द्वीप गया वहाँ नामदान का कार्यक्रम हुआ। प्रेमियों को काफी अच्छे तजुर्बे हुए और सबने खुशी-खुशी अपने तजुर्बे बताए। वहाँ पर प्रेमियों ने यह भी सवाल किया कि हमने जो कुछ यहाँ देखा है क्या हम घर जाकर भी देख सकेंगे? मैंने हँसकर कहा, ''हाँ भई प्यारेयो! इसे आप घटा नहीं सकते, आगे बढ़ाना आपका फर्ज है।''

आँखों से देखकर भी मन भ्रम में डाल सकता है। स्वपन में सतगुरु ने दया मेहर करके हमारी आत्मा को ऊपर खींचा होता है मन के लिए इसे भ्रम में डालना आसान ही होता है।

एक बीबी ने महाराज सावन सिंह जी से सवाल किया, ''रूहानियत में मुझे जो तजुर्बे होते थे अब वे समाप्त हो गए हैं। मैंने किसी को अपने तजुर्बे के बारे में बता दिया था।'' महाराज जी ने कहा, ''इसमें गुरु का क्या कसूर है? आपको कोई कीमती हीरा मिला हो अगर आप लोगों को उस हीरे का भेद देंगे, तो वे आपके हीरे को चुरा लेंगे।''

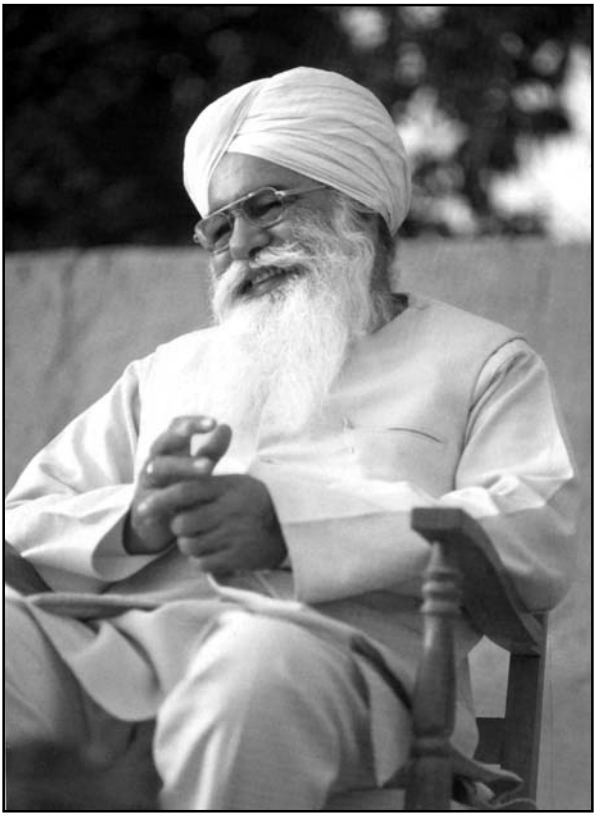

इसी तरह दूसरे लोगों को जलन होती है कि इसने इतनी तरक्की कर ली है, उसके बुरे कर्मों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ जाता है, हमारी आत्मा का शीशा धुंधला हो जाता है।

अबोहर में महाराज कृपाल का एक प्रेमी सर्विस करता था। वह बहुत अभ्यासी था, उसे महाराज कृपाल पर काफी भरोसा था। उसके साथ भी ऐसा ही हुआ कि उसने किसी को बता दिया तो उसे जो प्रकाश दिखाई देता था वह गुम हो गया। जब उसे महाराज जी के आने का पता लगा तो वह मेरे आश्रम में आया। उसने रोकर कहा कि मेरा तो सब कुछ खो गया है, मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है। महाराज कृपाल ने कहा, ''अगर तू किसी हब्शी को शीशा दिखाएगा तो वह उस शीशे को तोड़ देगा।''

दो साल पहले का वाक्या है कि पंजाब का एक प्रेमी 16 पी.एस. आश्रम से नामदान प्राप्त करके गया। उस प्रेमी ने अपने गांव में जाकर सतसंगियों को बहुत ऊँचे-ऊँचे तजुर्बे बताने शुरू कर दिए। एक सतसंगी को बहुत ईर्ष्या हुई उस सतसंगी ने मुझे पत्र लिखा कि बहुत अफसोस है कि हमें नाम लिए हुए दस-बारह साल हो गए हैं। इसी तरह उस गांव से एक और प्रेमी का ऐसा पत्र आया कि मुझे नाम लिए हुए बीस साल हो गए हैं मैं अभी तक इतनी तरक्की नहीं कर सका लेकिन इस प्रेमी ने कल नाम लिया है और यह इतनी तरक्की क्यों कर रहा है?

मैंने उन प्यारों को पत्र लिखा कि आप थोड़ा समय रुकें, मेरा पत्र पहुँचने तक इसके तजुर्बे बंद हो जाएंगे। वह प्रेमी हर महीने सतसंग में जरूर आता है लेकिन तजुर्बे बंद होने से तड़पने लगा है, रोता है। मैंने उससे कहा, ''देख प्यारेया! वह तो सतगुरु की दया-मेहर थी। अब तू मेहनत कर हिम्मत कर सब कुछ तेरे अंदर ही

है।'' जब आप दूसरे लोगों को अपने तजुर्बों के बारे में बताएंगे तो उन्हें जलन होती है कि यह इतनी तरक्की क्यों कर रहा है? इससे उसका फायदा नहीं लेकिन आपका नुकसान जरूर होगा।

महाराज सावन और महाराज कृपाल ने हमेशा यही सलाह दी अगर परमात्मा आपके ऊपर दया-मेहर करता है तो आप उसे कौड़ियों की तरह मत छड़काएं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपके अंदर से धुंआ तक भी नहीं निकलना चाहिए कि हम कुछ देखते हैं या हम कुछ हैं, यह सारी सतगुरु की दया है।''

प्यारेयो! दुनिया के स्वपन तो बिना सोचे समझे ही आ जाते हैं लेकिन गुरु का स्वपन नहीं आता। कई प्रेमी बहुत कोशिश करते हैं गुरु को याद करके सोते हैं। कई प्रेमियों के पत्र भी आते हैं कि हम घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करते हैं कि हमें स्वपन में गुरु के दर्शन हो जाएं। बहुत ठंडे दिल से सोचने की जरूरत है कि सतगुरु कभी भी आपको नौं द्वारों से नीचे आकर दर्शन नहीं देगा।

गुरु जब भी अपनी प्यार भरी दृष्टि के साथ आपकी आत्मा को ऊपर खींचेगा तब आप ऊपर के मंडलों के नज़ारे देख सकेंगे। सतसंगी को चाहिए कि वह उस वक्त से पूरा फायदा उठाए रोज उसी स्वरूप को अपनी आँखों के आगे रखकर भजन-अभ्यास करे।

सन्तमत परियों की कहानी नहीं यह एक सच्चाई है, यह करनी का मत है; बुद्धि विचार का मत नहीं। बच्चा, बूढ़ा, औरत, मर्द कोई भी भक्ति करे। कबीर साहब कहते हैं, ''कथनी करने वाले अनेकों सूरमें मिल जाते हैं जिन्होंने एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए मन-बुद्धि से बहुत तीर कसे होते हैं। मथ को निकालने वाले बहुत थोड़े होते हैं जो कमाई करके सच्चाई के साथ

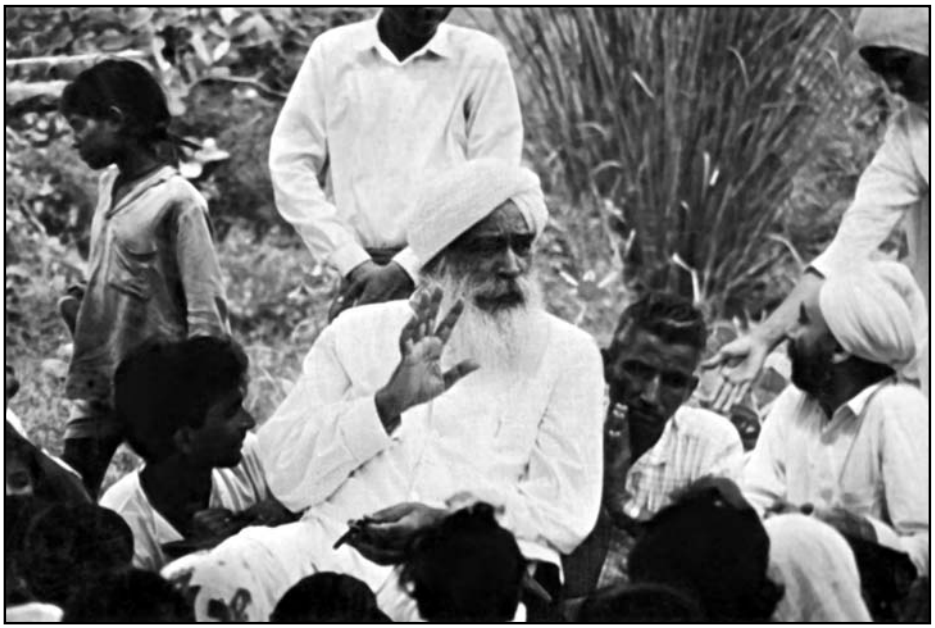

जुड़ते हैं।'' महाराज कृपाल ऐसे लोगों को दिमागी पहलवान कहा करते थे कि ये दिमागी कुश्ती करते हैं। प्यारेयो! यह बातों का मजबूत नहीं करनी का मजबूत है। आप नए भजनों में पढ़ते हैं:

ऐह गल्लां दा मजबूत नहीं कोई वी करके देखे।

मैं आशा करता हूँ अब आपको आसानी से समझ आ गई होगी कि दुनियावी स्वपन में खुशी नहीं होती। जब कभी गुरु का दर्शन होता है तो खुशी होती है सारा दिन दिल गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है। आप इसे स्वपन नहीं सच्चाई समझें, इसी स्वरूप को आँखों के आगे रखकर तरक्की करें।

***

6 मार्च 1992

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

अनमोल संदेश

बहुत अच्छा समय है। हमें प्यारे सावन-कृपाल की दया से आज अशान्त कलयुग में सतसंग का मौका मिला है। यह उनकी ही दया है कि हम नाम के साथ उनकी याद के साथ जुड़े। चाहे सतयुग, द्वापर, त्रेता या कलयुग हो हर युग में नाम जपना मुश्किल है। बेशक कलयुग में सतसंगियों की गिनती ज्यादा है लेकिन सबका ख्याल ज्यादा से ज्यादा फैला हुआ है। जिससे भी पूछें कि क्या नाम जपता है? वह यही शिकायत करता है कि फुर्सत नहीं, टाईम नहीं है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सारा दिन मजदूरी करे, हर सिमरन वेले वज्ञ सिर पड़े।

हम पाँच डाकुओं की, मन-माया की मजदूरी करते हैं ये हमें जो हुक्म देते हैं हम उसे बड़ी आसानी से मानते हैं; इनके आगे सिर झुकाते हैं। सतगुरु कहता है कि नाम जपें, नाम जपना आपके लिए फायदेमंद है। नाम जपने वाला सदा शान्त रहता है, नाम में ही शान्ति है। नाम उस ताकत को कहा गया है जो कण-कण में व्यापक है हर समय हमारी रक्षा कर रहा है उसी के आधार पर हम सब चल फिर रहे हैं।

यह कितने घाटे का सौदा है? यह हमारी भूल है। जिस ताकत के अंदर होने के कारण लोग हमसे प्यार करते हैं। बच्चे, पति, पत्नियां और रिश्तेदार हमें जी-जी करते हैं। कबीर साहब कहते हैं कि जब वह ताकत हमारे अंदर से निकल जाती हैः

घर की नार बहुत हित जास्यों, सदा रहत संग लागी।
जब ही हंस तजी यह काया, भूत भूत कर भागी।।

मियाँ-बीवी का रिश्ता सबसे गहरा है लेकिन जब ऐसा वक्त आता है तो कौन है? मेरा चश्मदीद वाक्या है कि एक आदमी अपने बच्चों से बहुत प्यार करता था। वह कहता था कि मैं बच्चों के बगैर जी नहीं सकता। उस आदमी की मृत्यु हुई, मृत्यु हर किसी की होनी है, हमारी भी होनी है। उसकी पत्नी ने सुबह बच्चों को अपने पिता का मुँह भी नहीं देखने दिया। वहाँ कई लोग खड़े थे, उन लोगों ने कहा कि बच्चों को इस जाते हुए का मुँह दिखाओ लेकिन पत्नी ने मना कर दिया कि बच्चे डर जाएंगे।

यह अपना-अपना विचार है। उन लोगों के दिल को चोट लगी कि इस आदमी ने बच्चों की खातिर भगवान को त्यागा, अपने कई कीमती उसूल त्यागे; हर तरह की ठग्गी-बईमानी करके इन बच्चों को खिलाया। इंसान अपनी पत्नी के लिए क्या-क्या नहीं करता! पत्नी की खातिर पति अपने कई कीमती उसूल भूल जाता है लेकिन वही पत्नी आज बच्चों को उसका मुँह भी नहीं देखने देती कि बच्चे डर जाएंगे।

जिंदगी में ऐसे आम वाक्या देखने में आते हैं क्या हम यह घाटे का सौदा नहीं कर रहे कि जिस परमात्मा की वजह से हमारा इतना आदर-मान है क्या कभी हमारा दिल उसके लिए तड़पा? क्या हमने कभी सोचा! जिसने हमें इतना प्यार भरा जीवन दिया है जो मुफ्त में हमारी रखवाली कर रहा है वह हमसे क्या माँगता है?

महाराजा रणजीत सिंह के पास एक भिखारी ने जाकर कहा, ''बादशाह सलामत! कुछ दें।'' महाराजा रणजीत सिंह ने कहा, ''मैं तुझे क्या दूं? परमात्मा ने तुझे दो आँखें दी हैं और मुझे एक ही आँख दी है। मैं तुझे पाँच सौ रूपये देता हूँ तू मुझे अपनी एक

आँख दे दे।'' वह भिखारी घबराया कि कहीं राजा मेरी आँख न निकलवा ले वह डरकर भागने लगा तो महाराजा रणजीत सिंह ने कहा, ''तू डर मत। मैं तुझे एक हजार रूपये देता हूँ और एक गांव का पट्टा भी तेरे नाम लिख देता हूँ लेकिन तू मुझे एक आँख दे दे।''

वह भिखारी एक आँख के बदले पूरा गांव लेकर अपना अच्छा जीवन बिता सकता था लेकिन फिर भी उसने महाराजा को अपनी एक आँख नहीं दी क्योंकि कोई देने के लिए तैयार ही नहीं। महाराजा रणजीत सिंह ने उस भिखारी से कहा, ''परमात्मा ने तुझे दो आँखें दी हैं और मुझे एक आँख दी है, मैं फिर भी परमात्मा की भक्ति करता हूँ उसका शुक्रगुजार हूँ, तुझे भी परमात्मा का शुक्रगुजार होना चाहिए, परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए।''

क्या कभी हम परमात्मा के शुक्रगुजार हुए? यह तो उस परमात्मा की दया है कि उसे हम पर तरस आया वह अपना सुख और शान्ति का देश छोड़कर हमारे लिए इस निचले देश में आया। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

संसार रोगी नाम दारू मैल लग्गे सच बिना।

गुरु नानकदेव जी के माता-पिता सदा ही आपको मारते-पीटते रहे भला-बुरा कहते रहे। गुरु नानकदेव जी के दिल में दया आई कि मैंने इनके पास अपनी जिंदगी का कुछ समय बिताया है। महात्मा दयावान होते हैं। आखिर आपकी माता के मुँह से कहलवाया, ''देख भई नानक! हम तो सारी जिंदगी तुझे अपना बेटा ही समझते रहे और जो तुझे नमस्कार करते हैं उन्हें भी पागल समझते थे लेकिन हमें आज पता लगा है कि तू भगवान है। भगवान के रूप में इंसान बनकर संसार में आया है। तू हमारे ऊपर भी दया कर हमें भी नाम की चिंगारी दे।''

आप सबको शिक्षा मिली है कि आपने नाम जपना है। सतसंगी ने सदा मन को एकाग्र करना है। हम सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके मन को एकाग्र कर सकते हैं। ट्रेन में बस में सफर करते हुए किसी से बात करते हुए अपना सिमरन जारी रखें। हम सिमरन नहीं करते ऐसे ही हाय! हाय! करते हैं कि भजन नहीं बनता। सतसंगी का ख्याल तेल की धार की तरह टिका होना चाहिए जैसे तेल की धार नहीं टूटती सतसंगी का सिमरन न टूटे।

तीसरा तिल हमारे सफर की शुरूआत है। प्रकाश, तारे, सूरज, चन्द्रमा और गुरु स्वरूप सब कुछ ही हमारे अंदर है। जब हम एकाग्र होते हैं तो गुरु कभी-कभी खुद भी प्रकट होता है अपनी झलक दिखाता है लेकिन जब हम एकाग्रता भंग कर लेते हैं तो ये चीजे वहीं मौजूद होती हैं लेकिन गायब हो जाती हैं। फिर हम कई बार सवाल करते हैं कि पता नहीं ये सच था या झूठ था? मैने इतना कुछ देखा लेकिन मन को ऐतबार नहीं आता।

सतसंगी को सदा ही सिमरन करना चाहिए। सतसंगी की तवज्जो सिमरन की तरफ होनी चाहिए। सोते हुए गुरु साथ हो, चलते हुए सामने चलता हुआ नजर आए। आप सबने दिल लगाकर भजन-सिमरन करना है।

आप सबकी वापसी यात्रा की शुभकामना करते हैं। मैं हमेशा ही आपको प्यार से कहा करता हूँ कि रास्ते में ज्यादा बातें न किया करें। आपसे खास विनती है बहुत बार पहले भी कहा गया है कि जिसने पत्र का जवाब प्राप्त करना है वह पत्र डाक से भेजे। कोई किसी का पत्र लेकर न आए अगर कोई सेवा देता है तो वह भी लेकर न आएं।

आप जब इंटरव्यू में आते हैं उस समय आपको अच्छा समय मिलता है। पहले संगत कम थी जैसे-जैसे संगत बढ़ गई है आपका फर्ज बनता है कि दूसरे प्रेमियों के लिए भी समय की कद्र जानें। मतलब की बात तो आप मेरे पास एक घंटा बैठकर करें मैं आपकी बात को सुनूंगा और उसका जवाब दूंगा।

अंग्रेज इंटरव्यू में आते हैं। हर एक की बात प्यार से सुनना मेरा फर्ज है। वे मतलब की बात करते हैं लेकिन जो जवाब सतसंग में आ गया है वे उसे लिखकर नहीं लाते। वे यहाँ से कुछ न कुछ कमाकर ले जाते हैं, मुझे खुशी होती है। आप अपने देश में जाकर अभ्यास करके इसे कायम रखें। मैं ऐसा नहीं कहता कि जैसे मेरे पास आए हो वैसे ही चले जाओ; आप मुझसे कुछ लेकर जाएं।

आप यहाँ आते हैं तो आपको जो सेवा मिलती है वह करें या भजन पर बैठें। इधर-उधर की कोई बात न करें। जैसा इंसान है आगे ऐसा ही बातें करने वाला मिल जाता है। लंगर बनाते समय सिमरन करें या भजन बोलें। आप गुरु के पास आए हैं गुरु की शिक्षा पर अमल करें।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर भरी संगत में कहा करते थे, ''संगत में हर तरह के आदमी हैं। जो भजन करते हैं सतसंग में आते हैं उनकी कोई शिकायत नहीं। बूढ़ियों को चुगली इतनी अच्छी लगती है कि अगर इन्हें कोई निन्दा-चुगली करने वाला मिल जाए तो ये सच्चखंड के दरवाजे से भी वापिस आ जाती हैं। सतसंग में और खाना बनाते समय भी बीबीयां मर्दों से ज्यादा भजन बोलती है। सिर पर टोकरी उठाकर भी भजन बोलती हैं ये सारी सिफतें बीबीयों में हैं।''

मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी बातों का बुरा नहीं मनाएंगे इसे प्यार से समझने की कोशिश करेंगे। जब भी आएं प्रेम-प्यार से कुछ कमाकर ले जाएं।

सिकन्दरपुर में महाराज सावन सिंह जी के पास एक लड़की ने कहा कि फलानी औरत मेरा भजन ले गई। महाराज जी ने पूछा, ''वह तुम्हारा भजन कैसे ले गई?'' वह लड़की उस औरत की चुगली करने लगी। महाराज जी ने कहा, ''जिसके पास भजन है उसे सोचना चाहिए कि मैं ऐसी बात न करूं, भजन करने वाला कभी ऐसी बात नहीं करेगा।''

आप सबने भजन-सिमरन करना है। रास्ते में भी अपना सिमरन करते जाना है। सोकर रात को न बिताएं, ऐसा न सोचें कि सीट मिल गई है यह सोने के लिए है। सतसंगी को भजन करके फायदा उठाना चाहिए।

***

7 दिसम्बर 1989

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दिल की तड़प

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

DVD -507

सेगल- आई डोहो

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताईं ।। बिलप करे चात्रिक की न्याईं ।।

यह बानी श्री गुरु अर्जुनदेव जी की है। यह बानी उस वक्त की है जब गुरु रामदास जी अमृतसर में थे और अर्जुनदेव जी लाहौर में थे। गुरु रामदास जी की बिरादरी में कोई शादी थी, शादी वालों ने गुरु रामदास जी को बुलावा भेजा लेकिन आप तो जा नहीं सकते थे इसलिए आपने अर्जुनदेव को शादी में भेज दिया और साथ ही यह कह दिया, ''जब तक न बुलाएं तब तक वापिस नहीं आना।

आपको पता है कि गुरु का हुक्म मानना कितना जरूरी होता है कमाई करने वाले तो जानते ही हैं। हुजूर कहा करते थे, ''जिसने मेरे साथ प्यार करना है वह सबसे पहले मेरी आज्ञा का पालन करे।'' गुरु अर्जुनदेव जी के दिल में तड़प थी क्योंकि आप हर रोज गुरु के बाहरी स्थूल शरीर के दर्शन करते थे और दूसरी तरफ यह हुक्म भी था कि जब तक बुलाया न जाए वापिस नहीं आना।

अर्जुनदेव जी ने उस समय ये पत्र सतगुरु रामदास जी को लिखे थे, पत्र में आप अपने गुरु को यह बताना चाहते हैं कि मेरे दिल में इस तरह की तड़प है जिस तरह मछली पानी के बिना तड़पती है। चात्रिक स्वाति बूंद के लिए तड़पता है क्योंकि उसे दुनिया का पानी अच्छा नहीं लगता। हजरत बाहू कहते हैंः

ऐह तन मेरा चश्मा होवे, मैं मुर्शिद वेख न रज्जा हू।
लूं लूं दे मुड़ लख लख चश्मे एक खोला एक कज्जा हू।
इतना डिट्ठया सब्र न आवे मैं होर किते वल भज्जा हू।
मुर्शिद दा दीदार है बाहू मैंनू लख करोड़ा हज्जा हू।।

दुनिया के रिश्तेदारों, यार-दोस्तों ने अंत समय में हमारा साथ नहीं देना। ये सब गर्ज से प्यार करते हैं, अपने-अपने मतलब की खातिर एक-दूसरे से बंधे हुए हैं। सतगुरु ही हमारा सच्चा साथी है जहाँ कोई भी हमारी मदद नहीं करता उस समय सतगुरु सूरमा आकर हमारी मदद करता है।

पल पल करिए याद गुरु नूं अंदर छुप छुपाते।
इक गुरु बिन दुनिया अंदर झूठे सारे नाते।।

जिस तरह का प्यार गुरु अर्जुनदेव जी बयान कर रहे हैं कि मेरे अंदर अपने गुरु के दर्शनों के लिए तड़प उठी है अगर किसी सेवक के अंदर सतगुरु के लिए इस तरह की तड़प उठ जाए तो उस सेवक को रोज-रोज भजन-सिमरन करने की या घुटने अकड़ाने की जरूरत नहीं क्योंकि तड़प ही हमारा पर्दा खोलती है। महात्मा हमें बताते हैं जिनके अंदर तड़प होती है वही भजन करते हैं, सेवा करते हैं और अपने गुरु के हुक्म पर अपना आप न्यौछावर कर देते हैं।

त्रिखा न उतरै सांत न आवै बिन दरसन संत प्यारे जीओ।।
हौं घोली जीउ घोल घुमाई गुर दरसन संत प्यारे जीओ।।

अब आप कहते हैं, ''हे सतगुरु! मैं आपके ऊपर कुर्बान हूँ, बलिहार जाता हूँ क्योंकि आपके दर्शनों के बिना मुझे शान्ति और तृप्ति नहीं। मेरा शरीर आग की तरह तप रहा है इसे तेरे दर्शनों से ही शान्ति है।'' फरीद साहब कहते हैं:

गलिए चिक्कड़ दूर कर नाल प्यारे न्यों।
चला तां भीजे कंबली रहां ता टूटे न्यों।
भीजो सीजो कंबली अल्लाह बरसे मेहों।
जाए मिला तिन सजणा मेरा टूटे नाहीं न्यों।।

गुरु साहब कहते हैं, ''अगर कोई मेरे प्यारे को मिला दे तो मैं अपने आपको बेचने के लिए भी तैयार हूँ।''

सँप्पा वाड़ समुंद्र घर शेरा पए बेकुन्न।
जे जम होय पेहरू प्रेमी न रुकन्न।।

तेरा मुख सुहावा जीओ सहज धुन बाणी।। चिर होआ देखे सारिंगपाणी।।

अब आप कहते हैं, ''हे सतगुरु! मुझे तेरे सतसंग में गए हुए बहुत समय हो गया है। मैं लाहौर में हूँ और सतसंग यहाँ से तीस मील दूर अमृतसर में हो रहा है। जिस तरह पपीहा स्वांति बूंद के लिए बहुत समय से तड़प रहा है उसी तरह मुझे तेरा दर्शन मिले हुए बहुत वक्त हो गया है। मुझे सतसंग नहीं मिला मैं तड़प रहा हूं तू मेरी आवाज सुनकर मुझ पर रहम कर दया कर।''

काफ कद्र बिछोड़े दी ओह जाणे जेहणा बिछड़े अपने यार कोलों।
तंदरुस्त नू सार की दुखड़े दी दुख पुछिऐ किसी बीमार कोलों।।

दुनिया को क्या पता है कि गुरु क्या है? सेवकों को ही गुरु का पता होता है। जिनका पर्दा खुल जाता है उन्हें ही पता है कि गुरु क्या हस्ती है, गुरु क्या दात देता है?

जिन्हां लग्गे प्रेम तमाचे घर दे कम्मों गईयां।
लेणा देणा सब छुटया खू विच पइँयां बहियां।।

धंन सो देस जहां तूं वसया मेरे सजण मीत मुरारे जीओ।।
हौं घोली हौं घोल घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीओ।।

अब आप इतनी तड़प बयान करते हैं, ''वह गांव वह देश धन्य है जहाँ तू बस रहा है। वे जीव धन्य हैं जो तेरा दर्शन करके लाभ उठा रहे हैं।''

सा धरत पई हरियावली जित्थे मेरा सतगुरु बैठा जाए।
से जन्त पए हरियावले जिनि मेरा सतगुरु देखया जाए।।

इक घड़ी न मिलते तों कलजुग होता।। हुण कद मिलीऐ प्रिअ तुध भगवंता।।

अब आप दिल में ऐसे विचार उठा रहे हैं अगर एक सैकिंड भी तेरा दर्शन न मिलता तो हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार घेर लेते, काल की सारी ताकतें हमारे पीछे पड़ जाती। तू ही हमें इनसे बचाने वाला दाता है दयावान है। अब आप मुझे कब दर्शन देंगे, कब अपने पास बुलाएंगे? क्योंकि आपने कहा है कि जब तक बुलाया न जाए वापिस नहीं आना। मेरे दिल के अंदर तड़प उठ रही है मेरी आत्मा को कब धीरज आएगा?

मोहे रैण न विहावै नींद न आवै बिन देखे गुर दरबारे जीओ।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मुझे नींद नहीं आती क्योंकि मुझे तेरा दर्शन नहीं मिलता।'' फरीद साहब कहते हैंः

रातां होईयां वड्डियां।

अब रातें बड़ी हो गई हैं मुझे भी नींद नहीं आती क्योंकि मैं सतगुरु से बिछड़ा हुआ हूँ। हजरत बाहू भी कहते हैंः

राती रत्ती नींद न आवे देहां बहुत हरानी हू।

प्रेमी को रात में नींद नहीं आती क्योंकि बिछोड़ा हड्डियों को खा जाता है। मैं दिन में हैरान हुआ फिरता है कि किसी भी तरह मुझे प्रीतम का दर्शन हो, प्रीतम नज़दीक बुलाए। जिसके दिल में प्रीतम से मिलने का शौक होता है वह मालिक से मिले हुए साधु-सन्तों की मिन्नतें करता है कि कोई उस मालिक की बात ही सुना दे; उस मालिक का संदेश ही लाकर दे दे!

मजनूं का लैला के साथ प्यार था हाँलाकि यह दुनियादारी प्यार था। मजनूं ने कहा कोई मेरी आँखो से देखे मुझे तो लैला की

ही शक्ल दिखती है। दुनिया को क्या पता कि लैला कैसी है? लैला एक बादशाह की लड़की थी मजनूं लैला के लिए फकीर हो गया था।

लैला ने यह कहलवा दिया कि मजनूं जिस दुकान से जो भी चीज़ मांगे उसे दे दी जाए। अनेकों ही झूठे मजनूं बाजार में निकल पड़े, सारा शहर उजड़ने लगा। एक दिन सारे महाजन बादशाह के पास आए और बादशाह से पूछा, ''मजनूं एक है या अनेक हैं।'' बादशाह ने लैला से पूछा, ''मजनूं एक है या अनेक है; सारा शहर उजड़ रहा है।'' लैला ने कहा, ''मजनूं एक है। मैं इसका इंतजाम कर देती हूँ।

लैला ने महाजन की दुकान पर एक प्याला और छुरी रखवा दी और महाजन से कह दिया, ''जो भी मजनूं आए उससे कहा जाए कि लैला को जिगर के खून की जरूरत है।'' तब रोज का दूध पीने वाले सारे मजनूं वहाँ से भाग गए। किसी ने सच्चे मजनूं के कानों में आवाज डाली कि तेरे नाम पर शहर लूटा जा रहा था। अब लैला ने कहलवाया है कि उसे खून की जरूरत है। तब असली मजनूं ने उस प्याले में अपने जिगर का खून डालकर लैला को भेजा। लैला ने अपने पिता से कहा, ''एक ही मजनूं है बाकी सारे झूठे थे।'' महात्मा हमें समझाते हैं:

ईक झूठा मजनूं बन बैठा शहर दवाले आके।
लैली ओहनूं नित भेज दी खंड दूध विच पाके।
ईक दिन लैली खून मंगया प्याला लाओ भराके।
चतुरदास ओह मुनकर होया नस गया शरमाके ।।

ये आशिक दुनियादारों की तरह शारीरिक संबंध नहीं रखते थे, ये सच्चे आशिक थे। इनका यह ख्याल था अगर हम इस दुनिया में ही कायम नहीं रहेंगे तो जो आदमी मिट्टी की औरत पर ही

कायम नहीं रह सकता वह जब पर्दा खोलकर सूक्ष्म मंडल में जाएगा उसे वहाँ नूरी औरतें मिलेंगी यह वहाँ डेरे लगाकर बैठ जाएगा; वहाँ कैसे कायम रहेगा?

महात्मा हमें यहाँ ब्रह्मचारी जीवन बिताने का हुक्म देते हैं। अपनी औरत के सिवाय किसी और की तरफ न जाना या अपने मर्द के सिवाय किसी के पास न जाना इसका मतलब यह है कि जब हम सूक्ष्म देश में जाते हैं तो वहाँ काल औरतों को नूरी मर्द पेश करता है और मर्दों को नूरी औरतें पेश करता है। जो लोग यहाँ कायम नहीं रहते वे आगे जाकर कैसे कायम रह सकते हैं?

महात्मा सबसे पहले यह जोर देते हैं कि हमने अपने जीवन को पवित्र बनाना है मन को शान्त रखना है। पवित्र मन ही भक्ति कर सकता है। महात्मा हमें बताते हैं कि कहीं दिल में यह ख्याल हो कि विषय-विकार भोगते हुए परमात्मा हमें अपने साथ मिला लेगा यह आप दिल से ही निकाल दें। हम जितने भी विषय-विकार भोगते हैं यह तो हम परमात्मा के साथ मजाक कर रहे हैं।

मोहे रैण न विहावै नींद न आवै बिन देखे गुर दरबारे जीओ।।
हौं घोली जीउ घोल घुमाई तिस सच्चे गुर दरबारे जीओ।।
भाग होआ गुर संत मिलाया।। प्रभ अबिनासी घर मह् पाया।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा की महिमा बयान करते हैं, परमात्मा का धन्यवाद करते हैं कि हमारे ऊपर परमात्मा ने दया-मेहर की हमें सन्त-सतगुरु से मिलाया। जब सन्त-सतगुरु ने दया की तो कहा कि तुझे जिस परमात्मा की तलाश है तू चौबीस घंटे जिसकी खातिर बिलख रहा है वह परमात्मा दूर नहीं तेरे शरीर, देह और वजूद के अंदर है। कबीर साहब कहते हैं:

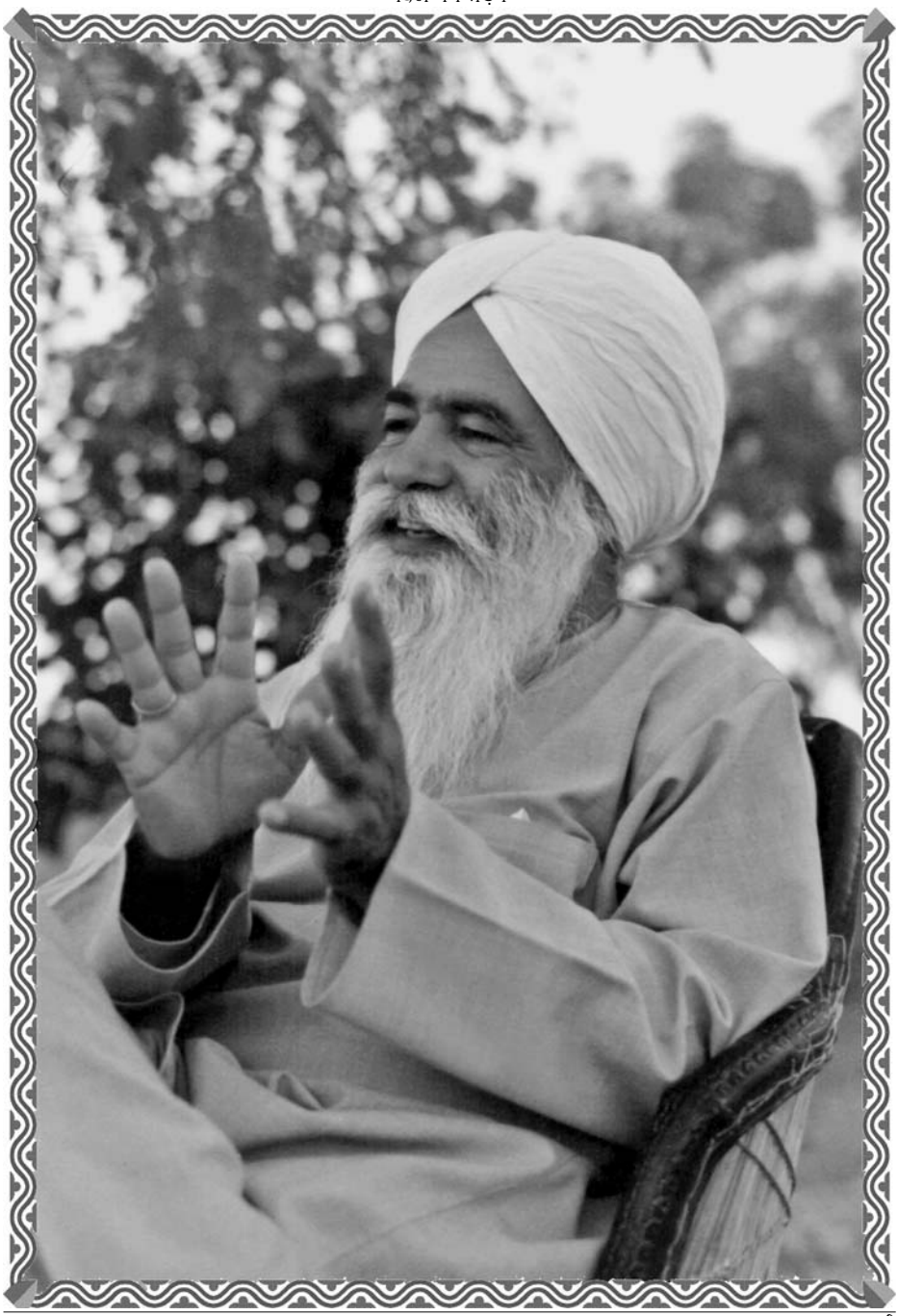

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें जाग सके तो जाग।।

परमात्मा जहाँ रहता है हम उस जगह तो उसे ढूंढते नहीं। हम बाहरमुखी हो जाते हैं कर्मकांड में उलझ जाते हैं। परमात्मा को बाहर पत्थरों में, पानी में और कागजों में ढूंढते हैं।

यूसुफ के भाईयों ने देखा कि यूसुफ होनहार, अच्छा और स्याना है अगर यह हमारे साथ रहा तो हमारा मान नहीं होगा सब लोग इसे ही मानेंगे। उसके भाईयों ने उसे कुँए में फैंक दिया। मिश्र के सौदागर जा रहे थे उन्होंने देखा कि किसी इंसान का बच्चा कुँए में गिर गया है, उन्होंने रहम खाकर युसूफ को कुँए में से निकाल लिया और मिश्र के बादशाह को बेच दिया।

मिश्र के बादशाह ने युसूफ को अपने महल में सेवादार के तौर पर रख लिया। युसूफ बहुत सुंदर और काबिल था। जुले खां मिश्र के बादशाह की बेगम थी वह युसूफ पर बेईमान हो गई। एक दिन बेगम ने युसूफ को कई मकानों के अंदर बुलाया और उसके सामने अपना खोटा ख्याल प्रकट किया। युसूफ ने सोचा अगर मैंने इसकी बात मान ली तो मेरा धर्म चला जाएगा अगर मैंने इसकी बात नहीं मानी तो ये मेरे ऊपर झूठा केस बना देगी मुझे कत्ल करवा देगी।

युसूफ अभी सोच ही रहा था कि वहाँ एक पत्थर की मूर्ति रखी थी, जुले खां उस मूर्ति को मानती थी। जुले खां उस मूर्ति के ऊपर कपड़ा डालने लगी तो युसूफ ने पूछा यह क्या है? जुले खां ने कहा कि यह मेरा ईष्ट है, मैं इसे मानती हूँ। अब हम बुरा कर्म करेंगे तो यह देखेगा। युसूफ ने कहा कि तू एक पत्थर से डरती है कि यह देखेगा? लेकिन मेरा परमात्मा तो हर जगह देखता है। इतना कहकर युसूफ भागने लगा तो जुले खां ने पीछे से उसका कुर्ता

पकड़ लिया और कुर्ता पीछे से फट गया। जुले खां अपने मंद कर्म को पूरा करने में कामयाब नहीं हुई। आखिर वह लेट गई बाहर से बादशाह आया उसने पूछा क्या बात है तू लेटी है? जुले खां ने कहा कि युसूफ ने मेरी बेईज्जती की है।

उन दिनों में बादशाह बहुत अच्छा न्याय करते थे और सजाएं भी बहुत कड़ी होती थी। बादशाह ने अहलकारों को बुलाकर कहा कि युसूफ ने यह काम किया है। अहलकारों ने कहा अगर कुर्ता आगे से फटा है तो युसूफ झूठा है अगर कुर्ता पीछे से फटा है तो जुले खां झूठी है। युसूफ को बुलाया गया तो उसने सारी कहानी सुनाई जब देखा तो कुर्ता पीछे से फटा हुआ था।

मालिक के प्यारों को हर जगह परमात्मा दिखाई देता है वे परमात्मा से डरते हैं लेकिन हम दुनियादार पत्थरों से डरते हैं। हमने लैंप जलाना हो अगर उसमें तेल, बत्ती और चिमनी वगैरहा पहले से ही तैयार हो तो सिर्फ माचिस की तिली घिसाने की जरूरत है अगर लैंप की चिमनी कहीं है बत्ती कहीं है और तेल भी न हो तो आपको पता ही है कि लैम्प जलाने में वक्त लगता है।

इसी तरह जिसके अंदर सच्ची तड़प है और जिसकी जिंदगी सच्ची-सुच्ची है वह गुरु से मिलने से पहले ही परमात्मा के आगे फरियादें करता है कि मुझे ऐसा गुरु मिला जो मुझे तुझसे मिला सके। ऐसी आत्मा का गुरु के पास जाना इस तरह है जिस तरह खुष्क बारूद को आग के नज़दीक कर दें।

सेव करीं पल चसा न विछड़ां जन नानक दास तुमारे जीओ।।
हौं घोली जीउ घोल घुमाई जन नानक दास तुमारे जीओ।।

***

02 अगस्त 1980

धन्य अजायब

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम :

23, 24 व 25 अक्टूबर 2015

27, 28 व 29 नवम्बर 2015

25, 26 व 27 दिसम्बर 2015

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

6, 7, 8, 9, व 10 जनवरी 2016